नारी शक्ति

महिला प्रभाग की समाचार पत्रिका

For Private Circulation Only

अंक – 71 — जुलाई 2025

ज्ञान सरोवर (उद्घाटन सत्र) - महिला प्रभाग द्वारा आयोजित महिला सम्मलेन का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए (बाएँ से दाएँ) ब्र.कु. शक्ति दीदी (वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, राजौरी गार्डन-दिल्ली), ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी (राष्ट्रीय संयोजिका-महिला प्रभाग), आचार्य उपेन्द्र जी (संस्थापक- अंतरयोग फाउंडेशन- मुंबई), ब्र.कु. चक्रधारी दीदी (अध्यक्षा- महिला प्रभाग), बहन कृष्णा गौर (राज्य मंत्री,स्वतंत्र प्रभार - पिछड़ा वर्ग, मध्य प्रदेश), बहन संजना जाटव (सांसद - लोकसभा,भरतपुर), डॉ. दीप्ति रावत भारद्वाज (राष्ट्रीय महासचिव,महिला मोर्चा - बीजेपी), ब्र.कु. शीला दीदी (कार्यकारी सदस्य - महिला प्रभाग) नवीं मुंबई ।

ज्ञान सरोवर - मांउट आबू में आयोजित राष्ट्रीय महिला सम्मेलन की रिपोर्ट

दिनांक 3 से 7 जुलाई 2025

महिला अध्यात्मिक सशक्तिकरण

माउंट आबू स्थित ज्ञान सरोवर परिसर में महिला प्रभाग द्वारा 3 से 7 जुलाई तक आयोजित राजयोग शिविर एवं राष्ट्रीय महासम्मेलन में लगभग 400 महिलाओं ने भाग लिया ।

मुंबई से पधारीं महिला प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी माला दीदी ने शब्दों से स्वागत करते हुए कहा कि आप निश्चित रूप से यहां आकर बहुत प्रसन्न महसूस कर रहे होंगे और यहां के सुरम्य, शांति से परिपूर्ण एवं पवित्र प्रकम्पनों का आनंद ले रहे होंगे। परमात्मा के घर में आपका हार्दिक स्वागत है।

महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी शारदा दीदी ने महासम्मेलन आयोजित करने के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। वर्तमान समय हम बहुत विशालता से चारों तरफ दृष्टि दौड़ाएं तो यह दिखाई देता है कि चारित्रिक, मानसिक विकृतियां बढ़ती ही जा रही हैं। एक सुंदर, शुद्ध, श्रेष्ठ एवं सुखमय समाज बनाने के लिए आध्यात्मिकता हमें दिशा निर्देश देती है। आध्यात्मिकता व्यक्ति की सोच, बोल एवं व्यवहार का सशक्तिकरण कर परिवर्तित करती है।

मुख्य अतिथि, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की उप कुलपति डॉ.सुनीता मिश्रा ने कहा कि भारत में महिलाएं पहले से ही सशक्त रही हैं । प्राचीन भारत में महिलाओं का बहुत उच्च स्थान था। शिक्षा द्वारा नारी का आर्थिक एवं सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। वर्तमान परिपेक्ष्य में दुर्गा माता की आराधना करते तो हैं लेकिन उनको शक्ति देने वाला कौन है: "शिव" । आज राजनीति, कला, साहित्य, विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में महिलाएं अपना परचम लहरा रही हैं और यह अत्यंत प्रेरणादायक भी है। हमने देखा कि सुनीता विलियम ने अंतरिक्ष में कैसी भी स्थिति आई लेकिन उन्होंने आंतरिक शक्ति के द्वारा अपना वह कठिन समय निकाला। जिससे सिद्ध होता है कि महिला किसी भी परिस्थिति में कुछ भी कर सकती है।

ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव एवं मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई जी ने अपने प्रेरणादायक वचनों को शुरू करते हुए कहा कि आज नारी शक्ति द्वारा ही ब्रह्माकुमारी संस्था एक वैश्विक संस्था बन गई है। पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने 380 बहनों को फरिश्तों के रूप में पूरे विश्व में भेजा । आज 140 देशों में यह संस्था सेवारत है तो उसका मूल आधार है नारी आध्यात्मिक सशक्तिकरण। विश्वविद्यालयों, स्कूलों में भी आज आध्यात्मिक शिक्षा देने की आवश्यकता है जिससे मनोबल बढ़ेगा ।

महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी डॉ. सविता दीदी ने महिला प्रभाग द्वारा हो रही सेवाओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आज भी महिला घरेलू या सामाजिक हिंसा की शिकार होती हैं। परिवारों की सोच अभी पूरी तरह से परिवर्तित नहीं हुई है। इस सब को ध्यान में रखते हुए महिलाओं के लिए माउंट आबू में एवं देश भर में सम्मेलन किए जाते हैं। पारिवारिक मूल्यों में सुख-शांति-समृद्धि कैसे हो इसलिए यह कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। "नारी शक्ति" पत्रिका के द्वारा भी नारी सशक्तिकरण के लेख और समय-समय पर होने वाली सेवाओं की सूचना दी जाती है।

जोधपुर से पधारीं प्रेरक वक्ता, लेखिका बहन सिद्धि जौहरी ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि "महिला आध्यात्मिक सशक्तिकरण" एक बहुत बड़ा टॉपिक है। मैं मानती हूँ जो भी हम यहाँ से सीखेंगे वह हमारे परिवार, समाज और देश

ज्ञान सरोवर (स्वागत सत्र) : महिला प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मलेन के स्वागत सत्र में भाग लेते हुए (बाएँ से दाएँ) ब्र.कु. शक्ति दीदी (वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, राजौरी गार्डन- दिल्ली), ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी (राष्ट्रीय संयोजिका - महिला प्रभाग), डॉ. सुनीता मिश्रा (उपकुलपति - मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर), ब्र.कु. चक्रधारी दीदी (अध्यक्षा- महिला प्रभाग), ब्र.कु. करुणा भाई (अध्यक्ष - मीडिया विंग), ब्र.कु. शारदा दीदी (राष्ट्रीय संयोजिका- महिला प्रभाग), बहन सिद्धि जौहरी (प्रेरक वक्ता और लेखक, प्रभावशाली व्यक्ति - जोधपुर) एवं ब्र.कु. माला बहन (क्षेत्रीय संयोजिका- महिला प्रभाग) ।

की सेवा में मददगार होगा । हम बहुत भाग्यशाली हैं जो इस महासम्मेलन का हिस्सा बन रहे हैं। इस महासम्मेलन से हम रिचार्ज होकर जाएंगे और हमें आंतरिक शक्तियों की प्राप्ति होगी।

महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी चक्रधारी दीदी ने कहा कि आप अपने घर में पहुंच गए हैं, आपका अपने ही घर में स्वागत है। गृहिणी अपने कार्य करते हुए परिवार को कैसे सुखमय बनाये इसके लिए यह सम्मेलन आयोजित किया गया है। आध्यात्मिकता द्वारा हमारा साधना युक्त जीवन बच्चों को परिवर्तित करता है और घर भी एक आश्रम के समान बन सकता है। परमात्मा का हम बच्चों को यही कहना है कि किसी से मांगो नहीं लेकिन तुम्हारे पास जो भी है उसे बांटते चलो।

उद्घाटन सत्र

इस सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में मुख्य **अतिथि श्रीमती कृष्णा गौर - राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग, मध्य प्रदेश** ने कहा कि महिला आध्यात्मिक सशक्तिकरण का विषय संवाद का नहीं समाज के नवनिर्माण का मूल मंत्र है। यह सांस्कृतिक एवं आत्मिक जागरण का आह्वान है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि सच्चा सशक्तिकरण बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक - आध्यात्मिक होता है। उन्होंने बताया कि आज की नारी हर क्षेत्र में सक्षम है, लेकिन समाज, परिवार और मानसिक तनावों के बीच उसकी शक्ति बिखर रही है। इस दौर में आधुनिकता और आध्यात्मिकता के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। राजयोग और आध्यात्मिक ज्ञान से ही महिलाएं आत्मबल और शांति प्राप्त कर सकती हैं।

भरतपुर से भारत की सबसे कम उम्र की सांसद बहन संजना जाटव ने अपने वक्तव्य में कहा कि महिला दुर्गा का रूप है। उसके अंदर धैर्यता, सहनशीलता का गुण है जिससे कठिन परिश्रम कर वह परिवार, समाज और देश की सेवा करती है। यहां आकर मुझे असीम शांति का अनुभव हुआ तथा यह समझा कि महिलाओं के लिए सामाजिक व आर्थिक सशक्तिकरण के साथ आध्यात्मिक सशक्तिकरण आवश्यक है। उन्होंने बड़ों के प्रति मान-सम्मान और स्नेह को संगठित परिवार का आधार बताया।

भारतीय जनता पार्टी की महिला मोर्चा की राष्ट्रीय सचिव डॉ. दीप्ति रावत भारद्वाज ने अपने उद्बोधन में कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ तथा भारतीय जनता पार्टी के कार्यों में साम्यता है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महिला सशक्तिकरण का कार्य सराहनीय है। प्रधानमंत्री मोदी भी महिला नेतृत्व सशक्तिकरण की बात करते हैं। व्यक्तिगत जीवन से मैं समझती हूँ कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए यह दिव्य स्थान सबसे सर्वोत्तम है।

अपने मुख्य वक्तव्य में महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी शारदा दीदी ने कहा कि महिला संस्कृति की संरक्षक है। आध्यात्मिक सशक्तिकरण ही जीवन की समस्याओं का समाधान है। अंधेरे को कोसने से अच्छा है एक दीपक जगाएं। आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए उन्होंने 10 बिन्दुओं को अपनाने के लिए कहा। हम सब आत्मा हैं। भारत मां, धरती मां, गाय मां, गंगा मां, आदि शब्दों में मां शब्द कॉमन है। परमात्मा जिस माध्यम से इसकी स्थापना करते हैं उनका नाम भी है ब्रह्मा। तो मां की विशेषता अनंत है। कहा जाता है "लाइट नेवर फाइट विद डार्कनेस"। "नालेज इज़ लाइट , नालेज इज़ माइट"। आप शिव शक्ति हैं, सर्वशक्तिमान की संतान मास्टर सर्वशक्तिमान हैं। स्त्री और पुरुष तो ड्रेस है। घर में नारी लक्ष्मी रूप में, नर नारायण रूप में है। आत्मा में परमात्मा की शक्ति को आह्वान करने की आवश्यकता है। स्वयं को ऊंची दृष्टि से देखने पर हमारा स्वमान जागृत होता है और इस दृष्टि से सृष्टि बदल जाती है।

नवीं मुंबई से पधारे "अंतर्योग फाउंडेशन" के संस्थापक आचार्य उपेंद्र जी ने आरोग्य संपन्न भारत बनाने की बात की। उनका लक्ष्य है किस तरह भारत विश्व गुरु बने। हर पुरुष भी मां के गर्भ से ही पैदा होता है। रक्षाबंधन में बहन की रक्षा वही भाई कर सकता है जो ब्रह्मचर्य जीवन का पालन करता है। हर एक के अंदर स्त्री और पुरुष दोनों गुण हैं। नारी के अंदर श्री लक्ष्मी के साथ-साथ श्री काली अर्थात् सौम्यता के साथ रौद्र रूप भी आवश्यक है। आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा भारत विश्व गुरु अवश्य बनेगा।

ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका एवं ज्ञान सरोवर का निर्देशिका राजयोगिनी सुदेश दीदी जी ने अपने प्रेरणादायी भाषण में आत्मा की शक्तियों और मातृत्व की गरिमा पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि हर आत्मा परमपिता परमात्मा की संतान है और उसके भीतर असीम शक्तियां हैं, जिन्हें जागृत करने की आवश्यकता है। दीदी जी ने मातृत्व को संस्कारों की जननी बताते हुए कहा कि सच्चा सशक्तिकरण आत्मा की शुद्धता, प्रेम और ज्ञान के प्रकाश से होता है।

महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी चक्रधारी दीदी ने कहा महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ी हैं लेकिन बात है आध्यात्मिक सशक्तिकरण की। समाज में फैले हुए विषय विकारों से मुक्ति दिलाने के लिए चंद बहनों ने अपना जीवन त्याग, तपस्या, सेवा द्वारा जगत माता का रूप लिया। दुर्गुणों, विकारों से मुक्त हुए बिना यह समाज

ज्ञान सरोवर (स्वागत सत्र) : महिला प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मलेन के उद्घाटन सत्र में अपने आशीर्वचन देते हुए ब्र.कु. सुदेश दीदी (संयुक्त मुख्य प्रशासिका - ब्रह्माकुमारीज़ एवं निर्देशिका - ज्ञान सरोवर) । मंच पर उपस्थित - ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी (राष्ट्रीय संयोजिका - महिला प्रभाग), आचार्य उपेन्द्र जी (संस्थापक- अंतरयोग फाउंडेशन- मुंबई), ब्र.कु. चक्रधारी दीदी (अध्यक्षा- महिला प्रभाग), बहन संजना जाटव (सांसद - लोकसभा,भरतपुर) एवं डॉ. दीप्ति रावत भारद्वाज (राष्ट्रीय महासचिव,महिला मोर्चा - बीजेपी)।

ठीक नहीं हो सकता। मानव जीवन का सुधार आध्यात्मिकता द्वारा ही संभव है। परमात्मा ने ज्ञान, गुण, शक्तियों से भरपूर कर हमें भेजा था। एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा थी। नर, नारायण समान और नारी, लक्ष्मी समान थी । लेकिन धीरे-धीरे हम अपने उस दिव्य प्रकाश को भूलकर आज इस स्थिति में आ गए हैं। अब पुन: परमात्मा, प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नयी सृष्टि का सृजन कर रहे हैं।

वाशी, नवीं मुंबई से पधारीं राजयोगिनी शीला दीदी ने राजयोग अनुभूति कराई।

महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. डॉ सविता दीदी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

पैनल चर्चा

"सद्भावना की सूत्रधार – नारी शक्ति"

राजनीतिज्ञ प्रभाग की मुख्यालय व राष्ट्रीय संयोजिका एवं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा दीदी ने कहा नारी एक शक्ति ज़रूर है लेकिन अनेक विकृतियों के कारण वो शक्तियाँ क्षीण हो गयी है । वर्तमान समय जो मानसिक विकृतियाँ नारी में आ रही है इसके लिए उनको मैडिटेशन के लिए समय निकालने की आवश्यकता है । मन को शांत करे, चार्ज करे ताकि हमारी जो आंतरिक शक्ति है वो विकसित हो जिससे उनके अन्दर जो स्पार्क है वो पुन: जागृत हो सके । जितना उसे पॉजिटिवली चार्ज किया जायेगा तभी वो सद्भावना की अग्रदूत बनेगी ।

व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका एवं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. गीता दीदी जी ने कहा कि नारी शक्ति माना हम शरीर से नारी हैं और आत्मा शक्ति है। इसलिए जब हम शरीर में रहते हुए आत्मिक स्वरूप को स्मृति में लाते है तो यह स्मृति ही शक्ति बनती है । दीदी ने बताया कि जब एक नारी अपने आत्म स्वरूप को पहचानकर, परमात्मा के ज्ञान से अपनी आंतरिक शक्तियों और ईश्वरीय गुणों को विकसित करती है तब उसमें शुभ भावना और सद्भावना जागती है, तभी एक नारी सद्भावना की सूत्रधार बन सकती है। जब वह आत्म स्मृति में रहती है, तो वही शक्ति और प्रेरणा का स्रोत बन जाती है। नारी शक्ति अपने प्रेम, शुभकामनाओं और अच्छे व्यवहार से पूरे परिवार और समाज का वातावरण बदल सकती है।

भीनमाल से पधारीं ब्र.कु. गीता दीदी ने कहा कि सास-बहू के रिश्तों में अक्सर टकराव उनके अपने-अपने बनाए फ्रेम या अपेक्षाओं के कारण होता है। बहू ससुराल में एक सुंदर कल्पना के साथ प्रवेश करती है, वहीं सास भी बहू को अपनी सोच के अनुसार ढालना चाहती है। जब तक दोनों एक-दूसरे को अपनी-अपनी दृष्टि में फिट करने का प्रयास करती हैं, तब तक समस्याएं बनी रहती हैं। समाधान तभी आता है जब वे एक-दूसरे को जैसे

ज्ञान सरोवर (पैनल सत्र) - महिला प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मलेन के पैनल सत्र में भाग लेते हुए (बाएँ से दाएँ) ब्र.कु. कोमल भाई, डॉ. अर्चना राव (योग प्रोफेशनल मेंटर - स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्र- श्रीगंगानगर, ब्र.कु. गीता दीदी (मुख्यालय संयोजिका - व्यापार एवं उद्योग प्रभाग), बहन स्मिता कारा (सहायक निदेशिका-फार्मास्युटिकल कंपनी- गिलियड साइंसेज, यूएसए), ब्र.कु. उषा दीदी (राष्ट्रीय एवं मुख्यालय संयोजिका- राजनीतिज्ञ प्रभाग), डॉ. मितल मकरंद (मीडिया प्रोफेशनल एवं लेखिका- कलोल- गाँधीनगर), ब्र.कु. गीता दीदी (वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका- भीनमाल) ।

हैं वैसे स्वीकार करना सीखें। दीदी ने यह भी कहा कि महिलाओं को समस्या नहीं, बल्कि समाधान का माध्यम बनना है। जब स्वार्थ के स्थान पर सेवा-भाव और प्रेम हो, तो सहयोग और सद्भाव अपने आप विकसित होता है। जैसे धरती में पहले बीज बोने पर ही फसल मिलती है, वैसे ही पहले देने की भावना से ही संबंधों में सुख और सामंजस्य संभव है।

बहन स्मिता कारा - डायरेक्टर - फार्मास्युटिकल कंपनी में एसोसिएट - यू.एस.ए, ने बताया कि आज के समय में परिवार में संस्कार मिलन करना बहुत मुश्किल हो गया है । क्योंकि आज हमारी शक्ति समाप्त हो चुकी है । उन्होंने अपना अनुभव साँझा करते हुए कहा कि उन्होंने राजयोग से सीखा कि महिला शुभभावना से कैसे परिवर्तन कर सकती है । उन्होंने कहा कि राजयोग के अभ्यास से एक्सेप्टेंस पावर बढ़ती है ।

श्रीगंगानगर से पधारीं योग प्रोफेशनल मेंटर (स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्र) डॉ. अर्चना ने कहा कि आत्मिक शक्ति को बढ़ाने के लिए राजयोग बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है । किसी और के लिए नहीं हमें अपने लिए राजयोग का अभ्यास तो करना ही है । जब हम स्वयं के लिए समय निकालेंगे, खुद को ठीक करने की तरफ ध्यान देंगे तो सब परिवार, बच्चे सब ठीक हो ही जायेंगे ।

गाँधीनगर से पधारीं मीडिया प्रोफेशनल एवं लेखिका डॉ. मितल मकरंद ने अपने भाषण में कहा कि पढ़ी-लिखी नारी सोशल मीडिया की गलत चीज़ें फॉरवर्ड न करके सद्भावना की शक्ति बन सकती है । क्योंकि सोशल मीडिया का गलत इस्तेमाल बढ़ रहा है, जिससे लो कॉन्फिडेंस, एंग्जायटी और डिप्रेशन जैसी समस्याएँ जन्म ले रही हैं। उन्होंने कहा कि नारी को चाहिए कि वह गलत चीजें न देखें और न ही उन्हें आगे फॉरवर्ड करे। स्मार्ट फोन हमारे हाथ में है, पर हमें उसका स्मार्ट तरीके से इस्तेमाल करना चाहिए और बच्चों को भी गलत कंटेंट से बचाना चाहिए। इसके लिए सोशल मीडिया के इस्तेमाल का समय सीमित करें, जैसे योग और ध्यान के लिए करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि माताओं की जिम्मेदारी सबसे अधिक है कि वे इस डिजिटल ट्रैफिक में फंसे बिना अपने परिवार और बच्चों के लिए सकारात्मक माहौल बनाए रखें। इस तरह एक शिक्षित नारी अपने परिवार और समाज में सद्भावना और सही सोच का प्रचार-प्रसार कर सकती है।

समापन सत्र

"संस्कृति की संरक्षक – महिला"

इस सम्मेलन के समापन सत्र में **मुंबई से पधारीं यो फिट और मिस्टिक टैरो की लाइफ कोच, सह संस्थापक एवं सीईओ डॉ. सपना प्रियदर्शनी** ने अपने वक्तव्य में कहा कि महिला सदा से संस्कृति और संस्कारों की संरक्षक रही है। प्राचीन काल में नारी को देवी माना गया, पर आधुनिकता और समानता की होड़ में नारी ने अपनी असली पहचान खो दी है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में महिलाएँ अपने पारम्परिक मूल्यों, पहनावे और खानपान से दूर होती जा रही हैं, जिससे परिवार और समाज में संस्कृति कमजोर पड़ रही है। उन्होंने कहा कि अगर हमें संस्कृति बचानी है तो हमें बच्चों के साथ समय बिताना होगा, वेशभूषा, आचार-विचार और आध्यात्मिकता पर ध्यान देना होगा। अंत में उन्होंने समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए सभी को अपनी जिम्मेदारी निभाने का आह्वान किया।

जोधपुर से पधारीं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. शील दीदी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारतीय संस्कृति देव संस्कृति रही है,जहाँ नारी को लक्ष्मी, सरस्वती और शक्ति का रूप माना गया। कालांतर में संस्कृति में गिरावट आई, परिवारों में प्रेम और त्याग की भावना कमजोर हुई। दीदी ने माँ के महत्व पर अनेक उदाहरण देकर बताया कि एक सशक्त और सच्चे संस्कारों वाली माँ ही अच्छे नागरिक और महान व्यक्तित्व गढ़ती है क्योंकि नारी

ज्ञान सरोवर (समापन सत्र) - महिला प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मलेन के समापन सत्र में भाग लेते हुए (बाएँ से दाएँ) बहन शामिला साहई- डायरेक्टर- (मेकटेक ग्रुप ऑफ़ कम्पनीज़ - दिल्ली), बहन गीता अग्रवाल (जिला उपाध्यक्ष, बी.जे.पी.- सिरोही), डॉ. सपना प्रियदर्शनी (लाइफ कोच, सह संस्थापक एवं सीईओ- यो फिट और मिस्टिक टैरो मुंबई - विक्रोली), ब्र.कु. शीलू दीदी- (वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका - मधुबन एवं उपाध्यक्ष- एजुकेशन विंग), ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई (अध्यक्ष- वैज्ञानिक, इंजिनियर एवं आर्किटेक्ट विंग) एवं बहन नेहा तिवारी (सीईओ एवं सह-संस्थापक- स्मार्डो टेक्नोलॉजी- रायपुर) २) महिला सम्मलेन में भाग लेती हुई गणमान्य महिलायें ।

ही बच्चों की पहली गुरु है और समाज में संस्कारों की जननी है। शुद्ध भोजन और सात्विक जीवन से ही घर स्वर्ग बन सकता है। दीदी ने राजयोग ध्यान द्वारा आत्मिक सशक्तिकरण और परिवार को संस्कारित करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि घर को आश्रम बनाने के लिए महिलाओं को अपने अंदर आध्यात्मिक सशक्तिकरण करना होगा। अंत में उन्होंने कहा कि नारी को संस्कृति की ज्योति बनकर समाज को उज्ज्वल बनाना है ।

दिल्ली से पधारीं मेकटेक ग्रुप ऑफ़ कम्पनीज़ की डायरेक्टर बहन शामिला साहई ने कहा कि हमारी संस्कृति हमारे संस्कारों से बनती है, और संस्कार हमारे विचार, भावनाओं और कर्मों से आकार लेते हैं। एक महिला अपने परिवार में प्यार, सेवा और संयम के संस्कार लाकर पूरे समाज और राष्ट्र को सशक्त बना सकती है। ब्रह्माकुमारी संस्था ने उन्हें सिखाया कि कार्य में धैर्य, आत्म-संयम और सहयोग का भाव जरूरी है। हर आत्मा से प्रेम और सम्मान का व्यवहार करना ही सच्ची संस्कृति है।

वैज्ञानिक, इंजिनियर एवं आर्किटेक्ट विंग के अध्यक्ष ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई जी ने भारतीय संस्कृति की महानता को रेखांकित करते हुए बताया कि हमारी संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम पर आधारित है । उन्होंने कहा कि हमें आंतरिक (मन और संस्कार) और बाहरी (प्रकृति) दोनों ही प्रकृतियों का संतुलन बनाए रखना जरूरी है। अगर हम अपनी आंतरिक प्रकृति को सुधारेंगे तो बाहरी पर्यावरण भी स्वच्छ और सुरक्षित रहेगा। उन्होंने कहा कि माताएं बच्चों में शुरू से ही सेवा, प्रेम और सम्मान के संस्कार डालती हैं, जिससे समाज और संस्कृति मजबूत बनती है। अंत में उन्होंने महिलाओं को संस्कृति की असली संरक्षक बताते हुए सभी को प्रेम, शांति और सहयोग से समाज को सुंदर बनाने का आह्वान किया।

माउंट आबू से पधारीं सिरोही जिले की उपाध्यक्ष, बीजेपी बहन गीता अग्रवाल जी ने कहा कि नारी सिर्फ परिवार ही नहीं, पूरे समाज की आत्मा है। भाषा, पहनावा, संस्कार और शिक्षा के माध्यम से महिलाओं ने संस्कृति को जीवित रखा है। उन्होंने बताया कि महिलाओं में असीम शक्ति है। अगर महिलाएं आत्मशक्ति और आध्यात्मिकता (जैसे ध्यान) को अपनाएं, तो समाज में सकारात्मकता, शांति और अच्छे संस्कार फैलेंगे। महिलाओं को प्राचीन संस्कृति को अपनाते हुए व्यवहारिक जीवन में अच्छे आचरण का उदाहरण बनना चाहिए।

रायपुर से पधारीं स्मार्डो टेक्नोलॉजीज़ की सीईओ एवं संस्थापक बहन नेहा तिवारी ने कहा कि महिलाएं केवल परिवार तक सीमित न होकर पूरे समाज में संस्कृति, परंपराएं और मूल्यों की संवाहक होती हैं। उन्होंने बताया कि जैसे आत्मा शरीर को जीवंत बनाती है, वैसे ही महिलाएं समाज में संस्कार और संस्कृति को जीवित रखती हैं। महिला ही सहनशीलता, स्नेह और करुणा के माध्यम से समाज को दिशा देती है। उन्होंने यह भी कहा कि भौतिक दृष्टि से पुरुष महिला की रक्षा करता है, पर आध्यात्मिक दृष्टि से महिला ही पुरुष की रक्षा करती है। महिला ही अर्धनारीश्वर का स्वरूप है, जो स्वयं तप कर समाज का उद्धार करती है।

एजुकेशन विंग की उपाध्यक्ष एवं ब्रह्माकुमारी. ज की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. शीलू दीदी ने नारी शक्ति की महानता और समाज में उसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि नारी समाज की धुरी है - जब नारी उच्च होती है, तब समाज भी उन्नत होता है। नारी के सशक्त और मर्यादित रहने से परिवार, समाज और राष्ट्र का उत्थान संभव है। उन्होंने कहा कि नारी के भीतर अपार आत्मबल और मनोबल है। नारी चाहे तो घर को स्वर्ग बना सकती है। उन्होंने यह भी बताया कि वर्तमान समस्याओं के समाधान के लिए जरूरी है कि नारी स्वयं को बदले, अपने अंदर आत्म-शुद्धि और सच्चाई लाए। शीलू दीदी ने सबको प्रेरित किया कि अगर हम अपने संस्कारों को बदलें, तो परिवार, समाज और पूरा संसार बदल सकता है। उन्होंने आह्वान किया कि हर नारी आत्म-परिवर्तन का संकल्प ले और समाज में प्रेम, शांति और सच्चाई फैलाए।

आगामी कार्यक्रमों की सूचना

07-09 नवम्बर 2025 –
महिला सम्मेलन
ओम शांति रिट्रीट सेंटर, गुरुग्राम

17 से 19 नवम्बर 2025
महिला मीटिंग एवं ट्रेनिंग
नागपुर

सम्पादिका : ब्र.कु. चक्रधारी, शक्तिनगर, दिल्ली
सह-सम्पादिका : ब्र.कु.डॉ. सविता, शान्तिवन
सम्पादकीय पत्र-व्यवहार : डॉ. सविता शान्तिवन,(आबू रोड)
प्रकाशक व मुद्रक ब्र.कु. आत्मप्रकाश,
ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन (आबू रोड) - 307510

राष्ट्रीय कार्यालय : 19/17, शक्तिनगर, दिल्ली-110007

प्रति,